













## संपादकीय

## संकीर्ण लोगों को शिवाजी की उदारता नहीं भाती

मध्ययुगीन भारत के सर्व समाज के लोकप्रिय शासक छ्रपति शिवाजी महाराज के नाम को लेकर अक्सर कोई न कोई विवाद खड़ा करने की कोशिश की जाती रही है। शिवाजी के नाम का राजनैतिक लाभ तो सभी उठाना चाहते हैं परन्तु उनके शासन करने की शैली, उनकी उदारता, धार्मिनेपेक्ष मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर सभी पर्दा भी डालना चाहते हैं। इसके बजाये शिवाजी महाराज के जीवन व उनके व्यक्तित्व को अपने अपने राजनैतिक लाभ के मद्देनजर अनेक नेता व राजनैतिक दल अपने ही तरीके से परिभासित करने की कोशिश करते रहते हैं। शब्दों के हेरे फेर से उनके बृहद मकसद पर पर्दा डालकर कुछ संकीर्ण विचारों वाले संगठन व इनसे जुड़े नेता शिवाजी को भी अपने 'संकीर्ण' विचार के फ्रेम में फिट करना चाहते हैं। परन्तु उपलब्ध दस्तावेज व इतिहास के स्वर्णिम पने इन संकीर्ण सोच रखने वालों की इन कोशिशों पर हमेशा पानी फेर देते हैं। और तभी यह अतिवादी संकीर्ण लोग इतिहास बदलने की मुहिम चलाने लगते हैं और वास्तविक इतिहास को झूटलाने में लग जाते हैं।

शिवाजी के नाम पर छिड़ा ताजा विवाद महाराष्ट्र के राजयापाल व आर एस एस के समर्पित प्रचारक रहे भगत सिंह कोश्यारी द्वारा दिये गये एक बयान को लेकर छिड़ा है जिसमें उन्होंने शिवाजी को 'पुराना आदर्श' और बाबासाहेब आवेदकर व केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को 'नया आदर्श' बताया। इतना ही नहीं बल्कि भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कथित तौर पर यह भी कहा कि- शिवाजी ने मुगल बादशाह औरंगजेब से पांच बार 'माफी मांगी' थी। शिवाजी के अपमान का यह मामला अब मुंबई उच्च न्यायालय तक पहुँच गया है जहाँ एक याचिका दायर कर कोश्यारी को राज्यपाल पद से हटाने की मांग की गई है। साथ ही इसी याचिका में राज्यपाल कोश्यारी व भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी के विरुद्ध एक आई आर दर्ज करने की मांग भी की गई है। शिवाजी के तेरहवें वर्षश उदयन राजे भोसले ने तो यहाँ तक कहा है कि - 'कोश्यारी एक 'थर्ड क्लास' व्यक्ति है। इसे राज्यपाल पद से हटाकर राजभवन से बाहर करना चाहिए। क्योंकि वह यहाँ बैठने के काबिल नहीं। इसे राजभवन से निकालकर वृद्धाश्रम भेज देना चाहिए।'

काश्यारा अथवा किसी अन्य भाजपा अथवा संघ परिवार के नेता द्वारा शिवाजी ही नहीं देश के किसी भी शासक अथवा नेता के उदारवादी व धर्मनिरपेक्ष पक्ष पर पर्दा डालना और उसी घुमा फिरा कर अतिवादी हिंदूवादी बताना इनकी दूरगामी रणनीति का एक हिस्सा है। अन्यथा जिस संघ व भाजपा के लोग पौराणिक कथाओं के महापुरुषों को अनंत काल तक के लिये मानव आदर्श मानते हों उनका मध्ययुगीन भारतीय इतिहास के महान नायक को पुराना आदर्श बताना आश्र्य का विषय है। याद कीजिये वरिष्ठ भाजपा नेता लाल कृष्ण अडवाणी ने पाकिस्तान में जिन्ना की मजार पर जाने के बाद जिन्ना को 'धर्म निरपेक्ष' नेता बताकर अपना पूरा राजनीतिक कैरियर समाप्त कर लिया। इतना ही नहीं बल्कि टीपू सुल्तान जैसे देशभक्त, उदारवादी व धर्मनिरपेक्ष शासक को बदनाम करने में भी यह अपनी पूरी ऊर्जा लगा देते हैं।

## राहुल का अद्भुत भालापन

श यात्रा सर्वाधिक सप

राहुल नाथ का नव्य प्रदेश पाना सपायक सपाहा रहने का उन्नाद है। पिछले तीन-चार दिनों में मुझे यहाँ के कई शहरों और गांवों से गुजरने का अवसर मिला है। जगह-जगह गहलू कमलनाथ दिग्विजयसिंह और

अवसर मिला ह। जगह-जगह राहुल, कमलनाथ, दिग्विजयासह अस्थानीय नेताओं के पोस्टरों से रास्ते सजे हुए हैं। लेकिन राहुल के कुछ बयान इतने अटपटे होते हैं कि वे इस यात्रा पर पानी फेर देते हैं। जैसा जातीय जनगणना और सावरकर पर कुछ दिन पहले दिए गए बयानों यह सिद्ध कर दिया था कि वह अपनी दादी और माता की राय के बिरुद्ध बोलने का साहस कर रहे हैं। ये कथन सचमुच साहसिक होते रहे प्रशंसनीय भी शायद कहलाते। लेकिन वे साहसिक कम अज्ञानपूर्ण ज्यादा थे। इसके लिए असली दोष उनका है, जो राहुल को पर्दे की पीछे से पूछ पढ़ाते रहते हैं। अब मध्य प्रदेश के महान स्वतंत्रता सेनानी टंट्या भील वै जन्म स्थान पर पहुंचकर उन्होंने कह दिया कि टंट्या भील ने अंग्रेजों वे विरुद्ध लड़कर अपनी जान दे दी, जबकि आरएसएस अंग्रेजों की मदद करता रहा। उन्होंने संघ द्वारा आदिवासियों को बनवासी कहने पर अपनी की, क्योंकि आदिवासियों की सेवा करनेवाले संघ के संगठन इसका नाम का इस्तेमाल करते हैं। राहुल से कोई पूछे कि क्या ये आदिवासी शहरों में रहते हैं? जो वर्तों में रहते हैं, उन्हें बनवासी कहना तो एकदम सही है। आदिवासी शब्द का इस्तेमाल 'कबाइली' या ट्राइबल के लिए हुआ करता था लेकिन उस समय यह सवाल भी उठा था कि क्या सिंपल आदिवासी लोग भारत के मूल निवासी हैं? बाकी सब 80-90 प्रतिशत लोग क्या बाहर से आकर भारत में बस गए हैं? मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने टंट्या भील वै एक महानायक का सम्मान दिया है। इसी प्रकार संघ को अंग्रेज व समर्थक बताना भी अपने इतिहास के अज्ञान को प्रदर्शित करना है। राहुल का भोलापन अद्भुत है। उस पर कुर्बान जाने का मन करता है। देश व स्वाधीनता का ध्वज फहरानेवाली महान पार्टी कांग्रेस के पास आज को परिपक्व नेता नहीं है, यह देश का दुर्भाग्य है। यह ठीक है कि हमारे देश में कुछ नेता प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंच गए लेकिन उनका ज्ञान राहुल विजितना या उससे भी कम रहा होगा लेकिन उनकी खुबी यह थी कि अपने चारों तरफ ऐसे लोगों को सटाए रखते थे, जो उन्हें लुढ़कने व बचाए रखते थे। कांग्रेस के पास आज मोदी के विकल्प के तौर पर न त कोई नेता है और न ही नीति है लेकिन इस अभाव के दौरान राहुल व यह भारत यात्रा बेचारे निराश कांग्रेसियों में कुछ आशा का संचार जरूर कर रही है लेकिन यदि अपने बयानों में राहुल थोड़ी रचनात्मकता बढ़ा और किसी के भी विरुद्ध निराधार अप्रिय टिप्पणियां न करें तो यह यात्रा उन्हें असफल बताएगी तब उन्हें बहुत ज्यादा परेंगी।

## **किताबी शिक्षा के साथ साथ व्याहारिक शिक्षा भी जरूरी**

**किशन भावनारी**  
सृष्टि में अनगोल बौद्धिक ज्ञान का धनी मानवीय प्राणी को जन्म से ही परिवार, समाज, मानवीय संपर्कों से व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान मिलना शुरू हो जाता है। याने जैसे जैसे मानुष बाल्य काल से बचपन और फिर युवा होता है, वैसे-वैसे व्यवहारिक ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ऑटोमेटिक अली स्वत संज्ञान से उसकी बौद्धिक क्षमता परिपक्व होती जाती है और फिर स्कूल कॉलेज से लेकर अनेक डिग्रियों याने किताबी ज्ञान पाकर सोने पर सुहागा की कहावत हम पूरी करते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि, शिक्षा दो तरह की होती है। एक किताबी शिक्षा और दूसरी व्यवहारिक शिक्षा। अगर किताबी व्याहारिक शिक्षा का ज्ञान नहीं हम शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित हमको शिक्षा के साथ व्योहारिक ज्ञान भी है तो शिक्षित लोगों की श्रेणी में आसाध्यों भारत में कठ वर्षों से देख रहे हैं कि कौशलता विकास पर जोरदार तरीके से फोकस फूला रहा है जिसके लिए सरकार द्वारा एक अलग कौशलता विकास मंत्रालय का गठन किया गया है जो उत्तराराज्यों में विभिन्न स्तरों कौशलता विकास का जन जन अधियान चला रहा है। इसके हुनर हाट सहित अनेकों कार्यालय का क्रियान्वयन किया जा रहा है जो मानना है कि इनका स

# कमांडो से सेनाध्यक्ष अब एक सफल राजनेता



सना  
से सेवानिवृत्त होने के  
'जनरल वीके सिंह' ने  
हद मजबूत नींव की ज़रूर  
रहे अपने चरम पर  
मुद्दों को उठाने का कार्य  
विरोधी व जनहित के  
लेकर के वह देश में  
रकार के खिलाफ चल  
के आंदोलन को अपना  
उसमें भाग लेने का  
किया था

पश्चात 'जनरल वीके सिंह' ने देश  
की बेहद मजबूत नींव की जड़ों को  
खोखला कर रहे अपने चरम पर पहुंच चुके  
भ्रष्टाचार के मुद्दों को उठाने का कार्य शुरू किया  
था, भ्रष्टाचार विरोधी व जनहित के बहुत सारे  
मसलों को लेकर के वह देश में तत्कालीन  
यूपीए सरकार के खिलाफ चल रहे अन्ना  
हजारे के आंदोलन को अपना समर्थन  
को देकर उसमें भाग लेने का कार्य  
किया था

तकनीक की जबरदस्त कमी से जूँझ रही भारतीय सेना की बेहद गंभीर हो चुकी समस्या को तुरंत पहचान कर तत्कालीन रक्षामंत्री व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को भी समस्या से अवगत करवाने का साहसिक कार्य किया था। उन्होंने देश की सेना के टैक्सों में गोला-बारूद खत्म होने के कागर पर है और सिस्टम के हद ढुलमुल रखाए से अप्रचलित लोक फौजियों के जीवन व देश को जलने में दाता रही है। जैसे

अहम व महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। इसके पश्चात 'जनरल वीके सिंह' मार्च 2014 में अपनी अधिकारिक रूप से राजनीतिक पार्टी में शुरूआत करते हुए भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गये थे और वर्ष 2014 वें नोकसभा के चुनावों में वह उत्तर प्रदेश वें आजियाबाद लोकसभा क्षेत्र से चुनावी रणभूमि पर उत्तर गये थे। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में 'जनरल वीके सिंह' ने कांग्रेस वें देंगज स्टर उमीदवार प्रसिद्ध फ़िल्म स्टार राज बब्बर को भारी मतों से हराने का काम किया था, उस वक्त 'जनरल वीके सिंह' के कुल 7 लाख 58 हजार 4 सौ 82 वोट मिले थे और राज बब्बर दूसरे नंबर पर रहे, 'जनरल वीके सिंह' ने 5 लाख 67 हजार 2 सौ 60

निर्वहन अपनी लोकसभा के लोगों का परीक्षण तरह से ध्यान रखते हुए सफलतापूर्वक निर्वहन करने का कार्य कर रहे हैं। \*। 'जनरल वाइकेंडिंग्स' ने अपनी विशिष्ट कार्यशैली, मेहनत व जुझारू तेवरों का समय-समय पर देश व दुनिया को बखूबी परिचय देना का कार्य किया है। वह एक ऐसे जांबाज जिंदादिल योद्धा है जो चाहे वर्दी में रहे हो या फिर देश के

आम आदीनी के लिवास में या देश में एक राजनेता के रूप में हमेशा मान सम्मान व स्वाभिमान के साथ एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अनुशस्ति जीवन यापन करते हुए मान भारती की सेवा करने के लिए तत्पर तैयार खड़े रहते हैं। "जनरल वीके सिंह" ने सेना में रहते हुए एक आम सैनिक से लेकर सर्वोच्च पदों पर आसीन जांबाजों की विकट परिस्थितियों में काम करने की क्षमता से देश दुनिया को अवगत करवाने का कार्य बखूबी किया था। उन्होंने देश के सामने विकट परिस्थितियों में मां भारती की सेवा का कार्य करने वाले सेना के जांबाज सैन्यकर्मियों के वर्षों से लंबित दुख-दर्द व समस्याओं को लाकर के उनके निदान के लिए अपने कार्यकाल में धरातल पर बहुत सारे सकारात्मक प्रयास किये थे। उन्होंने सेनान्यक्षम के रूप में जंग लगे दशकों पुराने खस्ताहाल हथियारों के भरोसे संघर्ष कर रही वीर जांबाज भारतीय सेना के आधिनिकीकरण करने पर पूरा जोर दिया था और उसके लिए धरातल पर कारगर कार्य करने का काम किया था। "जनरल वीके सिंह" ने सेना में सेवा के उसके काल खंड के दौरान सेना के शीर्ष व निचले स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार की आयेदिन पोल खोलकर भ्रष्टाचार की गंदगी को साफ करने का कार्य बखूबी से किया था, हालांकि उनके इस साहसिक कदम ने उस वक्त देश-दुनिया की मैदिया में बहुत ही जबरदस्त चर्चा बढ़ावारे का कार्य भी किया था। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान भारतीय सेना की रीढ़ माने जाने वाले लाखों पैदल सैनिकों के दर्द को समझा, क्योंकि वह बेहद निम्नस्तर की गुणवत्तापूर्ण वाले कपड़ों और घटिया उपकरणों आदि से लैस थे, उनको बेहतर आधुनिक संसाधनों से सुरक्षित करवाने की पहल करने के एक बहुत बड़े असंभव कार्य को ढूँ संकल्प के दम पर "जनरल वीके सिंह" ने संभव करके देश-दुनिया को दिखाया था, क्योंकि देश की सुरक्षा से जुड़ा यह महत्वपूर्ण कार्य भी गलत नीतियां, भ्रष्टाचार व लालफीताशही के चलते दशकों से फाइलों से बाहर निकल कर धरातल पर मूर्त रूप लेने के लिए तैयार ही नहीं था।

# कार्यपालिका बनाम न्यायपालिका

डॉ. ओ.पी. त्रिपाठी

सर्वोच्च न्यायालय ने बीते दिनों निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति को लेकर एक अहम टिप्पणी की और एक मजबूत मुख्य चुनाव आयुक्त की जरूरत पर जोर दिया। एक याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि संविधान ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त और दो अन्य निर्वाचन आयुक्तों के नामुक कंधों पर बहुत जिम्मेदारियां सौंपी हैं और वह मुख्य चुनाव आयुक्त के तौर पर टीएन शेषन की तरह के मुद्द़ चरित्र वाले व्यक्ति को चाहता है संविधान पीठ चाहती है कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति समिति में देश के प्रधान न्यायाधीश को भी शामिल किया जाए। इससे नियुक्ति की प्रक्रिया और चयन में तटस्थता सुनिश्चित हो सकेगी। ऐसे व्यक्ति को संवैधानिक पद पर बिठाया जा सकेगा, जो खुद को सरकार के सामने बाध्य अथवा भयभीत न होने दे। तमाम राजनीतिक दबावों से भी अप्रभावित रह सके। देश के अटांगी जनरल और सॉलिसीटर जनरल ने इसे कार्यपालिका में न्यायपालिका का दखल माना है। वे इसे लोकतंत्र पर खतरा भी मानते हैं। शीर्ष विधि अधिकारियों का मानना है कि इससे संविधान फिर से लिखना पड़ सकता है। संविधान ने लोकतंत्र के अलग-अलग संभों और उनकी शक्तियों का वर्गीकरण तय कर रखा है, फिर हस्तक्षेप की गुंजाइश कहाँ से होनी चाही है?

पंजाब काठर के आईएस अधिकारी रह अरुण गोयत को चुनाव आयुक्त नियुक्त किया है। संविधान पीठ ने सिर्फ नियुक्ति-प्रक्रिया देखने के लिए उस केस की फाइल मांगी है, जिस पर अटॉर्नी जनरल ने आपत्ति दर्ज कराई है। संविधान पीठ को अधिकारी की स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति और चुनाव आयुक्त के तौर पर नियुक्ति में कुछ विसमात्रियां लगती हैं। प्रधान न्यायाधीश को नियुक्ति में एक पक्ष बनाने का सुझाव तो प्रसंगवश है। जस्टिस केएम जोसेफ ने जवाब दिया कि सीबीआई निदेशक और केंद्रीय सतर्कता आयुक्तों की नियुक्ति में प्रधान न्यायाधीश भी एक पक्ष होते हैं। तो क्या लोकतंत्र खतरे में पड़ गया? दरअसल यह संविधान पीठ और कार्यपालिका के बीच एक संवैधानिक चुनौती बन गई है, जिसे हर हाल में संबोधित किया जाना चाहिए। संविधान पीठ का सरोकार और सवाल यह है कि मुख्य चुनाव आयुक्त और शेष दो आयुक्तों के कार्यकाल 6 साल तय हैं। उन्हें पूरा क्यों नहीं किया जा रहा है? मुख्य चुनाव आयुक्त और आयुक्त तय कार्यकाल से पहले ही सेवानिवृत्त हो रहे हैं अथवा उन्हें इस्टीफे के लिए बाध्य किया जा रहा है? संविधान पीठ की चिंता है कि यदि सरकार अपने बस मैन को आयुक्त नियुक्त करेगी, तो ऐसे व्यक्ति की सोच भी सरकार जैसी ही होगी। देखने में सब कुछ ठीक है।

है या नहीं, यह देश के चुनाव पूर्णतर स्वायत्तं संविधान पीठ जोसेफ हैं, जे आयोग की महत्वपूर्ण सुधार नए चुनाव आरं वाली याचिका एक संवैधानिक में चुनाव-दर-नागरिकों के प्रासारिक बनाए अंतिम दशक वाले मुख्य चुनाव अपने विजन चूल परिवर्तन दबाव के चुनाविषयसनीय ब सख्त कायदशैल व्यवहार नहीं शायद ही किसी कार्यकाल मिल की प्रक्रिया को वजह है कि वे को इस बाबत दौरान तत्त्व कहना पड़ा

अंधेरा सवाल है। आखिर यह आयोग का सवाल है, जो और स्वतंत्र होना चाहिए। के अध्यक्ष जस्टिस केएम इस केन्स के जरिए चुनाव मिका और स्वायत्ता में के पक्षधर हैं। उनके सामने की नियुक्ति को चुनौती देने ही है। भारत में चुनाव आयोग संस्थान है, जो स्वतंत्र भारत चुनाव कराता रहा है। उसने नियंत्रिकार को जिंदा और रखा है। पिछली सदी के पूरे कार्यकाल में काम करने वाल आयुक्त टीएन शेषन ने चुनाव प्रक्रिया में आमूल-रूप बिना किसी राजनीतिक वी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया। उनकी अनुशासित व से राजनीतिक दल निरंकुश भर पाये। लेकिन उनके बाद मुख्य चुनाव आयुक्त को पूरा हो जिससे वे चुनाव सुधार मूर्त रूप दे पाते। शायद यही ग्रीष्म कोर्ट की सविधान पीठ एक वाचिका पर सुनवाई के अपनी करनी पड़ी। कोर्ट को सविधान में मुख्य चुनाव

य न करके यह कार्य संसद पर छोड़ा गया था, जिसका सरकारें अनुचित लाभ उठाता ही है। शीर्ष अदालत ने इस मुद्दे की सुनवाई करके दौरान नये चुनाव आयुक्त की नियुक्ति क्रिया को लेकर सवाल उठाये। साथ ही सरकार से इस चयन से जुड़ी फाइल पेश करने को कहा गया है। कोर्ट का कहना था कि मुख्य चुनाव आयुक्त को इतना सशत्र बोला चाहिए कि यदि किसी चुनाव प्रक्रिया के दौरान सरकार के मुखिया के खिलाफ कोई शक्तिवाही आये तो उस पर भी कार्रवाई की जानी चाहिए।

पहले भी इस मुद्दे को लेकर सवाल उठाया जाते रहे हैं। संविधानिक व्यवस्था के अनुसार मुख्य चुनाव आयुक्त का कार्यकाल छह वर्ष तक है, जो भी पहले पूरा होता है। लेकिन पिछले कुछ समय से देखने में अनुभव हो रहा है कि सरकारों द्वारा चुनाव आयुक्त की नियुक्ति इस तरह की जा रही है कि वे नेतृत्व अधिकतम आयु सीमा अने वेकारण अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाते हैं। इलालिक सरकारों को पता होता है कि नियुक्ति के द्वारा ये गये व्यक्ति की जन्मतिथि क्या है कि नियुक्ति उत्तेजनायी है कि लोग कमीशन भी अपने रिपोर्ट में कह चुका है कि मुख्य चुनाव आयुक्त सहित सभी चुनाव आयुक्तों का चयन सीमित की सिफारिशों वेकारण अनुरूप हो, जिसमें प्रधानमंत्री, नेता प्रतिष्ठान और अन्य व्यक्ति शामिल हैं।

नेता तथा मुख्य न्यायाधीश शामिल हों। यही वजह है कि इस मामले की सुनवाई कर रही संविधान पीठ के न्यायमूर्ति के.एम.जोसेफ ने सरकार से पूछा कि क्या वह इस प्रक्रिया में मुख्य न्यायाधीश को शामिल करेगी? यह तभी संभव है जब मुख्य चुनाव आयुक्त व चुनाव आयुक्त किसी सरकार, राजनीतिक दल व नेता के प्रभाव से मुक्त होकर निष्पक्ष ढंग से काम करें। आयोग का संदर्भ में प्रत्येक नागरिक का मताधिकार अनुच्छेद 326 के तहत एक वैधानिक नहीं, संवैधानिक अधिकार है। जिस तरह चुनाव सम्पन्न कराए जाते रहे हैं और सत्ता का हस्तांतरण निर्बाध रूप से हो जाता है, उसके लिए चुनाव आयोग की प्रशंसा भी की जाती रही है। हमारे चुनाव आयोग ने कई अन्य देशों में भी टट्स्थ और निष्पक्ष चुनावों का मार्ग प्रशस्त किया है। यह प्रक्रिया तभी संभव होती रही है, जब आयोग को संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। इसकी कार्य-प्रणाली और न्यायपालिका के हस्तक्षेप से स्वतंत्र रही है, लेकिन कुछ उदाहरण हैं, जब आयोग केंद्र सरकार का ही एक हिस्सा प्रतीत होता रहा है। उसे प्रधानमंत्री दफ्तर से अधोषित निर्देश दिए जाते हैं और वह उसी के अनुरूप चुनाव संबंधी फैसले लेता है। दरअसल दशकों से यह मांग उठती रही है कि चुनाव आयोग में नियुक्त द्विपक्षीय

हाना चाहए।

## गल प्रशिक्षण के अवसरों की कमी

पर प्रकाश डाला गया है कि महिलाओं को अपने कौशल को उन्नत करने या एक अलग क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने की कम संभावना है। अच्छी नौकरियों के अभाव में, अधिक युवा लोग, विशेष रूप से महिलाएं, अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए कम से कम अंशकालिक रूप से खेती और कृषि आजीविका में रह रहे हैं या वापस लौट रहे हैं जबकि पुरुष और महिला दोनों कृषि कौशल को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हासिल करते हैं, पुरुष अपने सामाजिक नेटवर्क का विताना करते हैं और अन्य चैनलों के साथ-साथ सहकर्मी शिक्षा के माध्यम से भी नए कौशल सीखते हैं, जबकि प्रमुख जाति की महिलाओं और लड़कियों द्वारा कौशल अधिग्रहण घरेलू क्षेत्र तक



# विदेश संदेश

## 'दुनिया की सबसे मजबूत परमाणु शक्ति बनना हमारा अंतिम लक्ष्य', तानाशाह किम जोंग उन ने दी धमकी



प्रयोगशाला। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने विश्व के तमाम देशों को संदेश देते हुए कहा है कि आपे बाले दिनों में दुनिया की सबसे ताकतवर परमाणु शक्ति बनना उत्तर कोरिया का अंतिम लक्ष्य है। उन्होंने इसके लिए दर्जनों सैन्य अधिकारियों को प्रोत्साहित भी किया है। किम द्वारा यह घोषणा देश की नई ह्वासों-17 अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला के मिसाइल (आईसीबीपीय) के परीक्षण करने और परमाणु हथियारों के साथ अमेरिका परमाणु खतरों का मुकाबला करने का संकल्प लेने के बाद आई है। किम ने कहा कि परमाणु बल का निर्माण राज्य और लोगों की गरिमा और अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला की मजबूती से रक्षा करने के लिए है, और इसका अंतिम लक्ष्य दुनिया की सबसे शक्तिशाली सामरिक शक्ति बनना है। किम जोंग ने ह्वासों-17 को दुनिया का सबसे मजबूत सामरिक हथियार कहा और कहा कि यह उत्तर कोरिया के संकल्प और अंतः दुनिया की सबसे मजबूत सेना बनाने की शक्ति का प्रदर्शन करता है।

हमारे वैज्ञानिकों ने अद्भुत छलांग लगाई किम जोंग उन

किम ने कहा कि उत्तर कोरिया के वैज्ञानिकों ने बैलिस्टिक मिसाइलों पर

### श्रीलंका के तमिल राजनीतिक दल नाये सविधान में स्वायत्ता के लिए जोर देंगे

#### अफगानिस्तान के 95 फीसद लोगों के पास रोटी के लाले

काबुल। तालिबान सासित अफगानिस्तान की आधी आबादी खाद्य असुरक्षा का सामना कर रही है। यहां की 95 फीसदी आबादी के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन ही नहीं है। इस देश में पांच से कम आयु के 10 लाख से अधिक बच्चे गंभीर कुपोषण का शिकार



हो चुके हैं। यह आकलन संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम का है। ह्यूमन राइट्स वॉर्क के एस्पर्ट के मुताबिक 15 अगस्त 2021 से ही अफगानियों का जीवन नक्की जैसा हो गया है। ये देश दुनिया के सबसे खाबाब मानीय संकट का सामना कर रहा है। लोग खूब से मर रहे हैं। कूद रिपोर्ट में कहा गया है कि हालात इस करद खाबाब है कि महिलायं अपने खूबे बच्चों को नींद की दवा खिलाकर सुलाने को बेवश हैं तकि वह खाना न मारे।

#### राष्ट्रपति जो बाइडन ने सपरिवार क्रिसमस ट्री को लाइट से सजाया

नानूकेट। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने सपरिवार 'थैंक्सगिभिं' के अवकाश के दौरान कुछ देरतक नानूकेट में खरीदारी की। इसके बाद क्रिसमस ट्री को वार्षिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान बाइडन के साथ उनके कुछ



पोते-पोतियां भी थे। बाइडन और उनका परिवार मैसेजुसेट्स द्वारा पर थैंक्सगिभिं की खुशियां बिता रहा है। यहां उन्होंने अपने मित्र और अब्बायें डेविड रूबेनस्टीन का एक शानदार परिसर किया रहा है।

#### 26/11 मुंबई हमले के विरोध में जापान, अमेरिका में पाकिस्तान के विलाफ प्रदर्शन

टोक्यो/न्यूयॉर्क। मुंबई में 26 नवंबर, 2008 को हुए अंतकी हमले की 14वीं बरसी पर दिवंगत आत्माओं के प्रति देश-विदेश में श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। इस हमले में अठ सुरक्षाकर्मियों सहित 166 लोगों की मौत हो गई थी।

अमेरिकी और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न्यूयॉर्क में पाकिस्तान वाणिज्य दूतावास के

कार्यालयों और दक्षिण एशियाई पाकिस्तान सामुदायिक केंद्र में प्रवासियों ने न